मैटी, बैठ जाओ! बैठ जाओ मैटी!

मैटी के ज़रिए बच्चों के विकास के मुद्दों को समझने की कोशिश

दीपाली शुक्ला

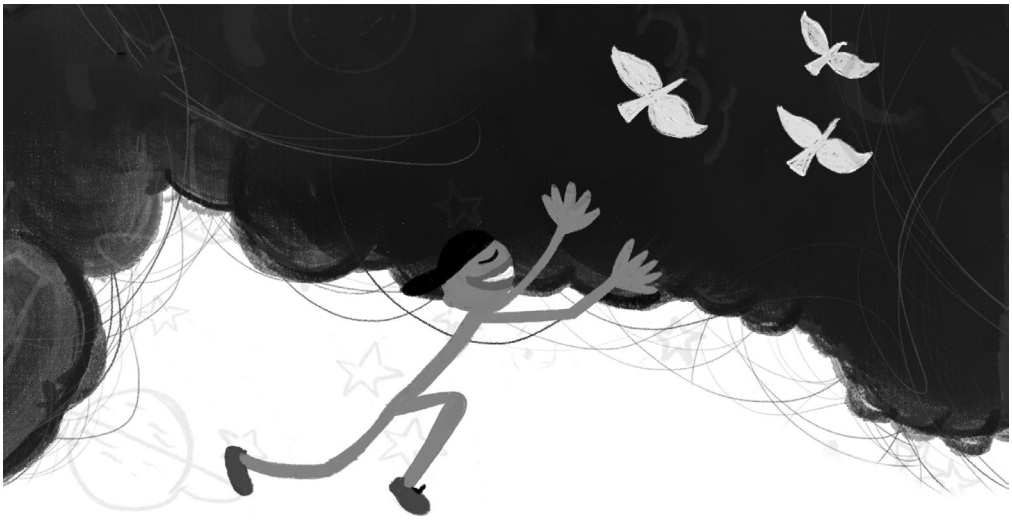

इन्दु एल हरिकुमार द्वारा लिखित और चित्रित *मैटी, बैठ जाओ! बैठ जाओ, मैटी!* किताब को बीते बरस मेरे द्वारा कई प्रशिक्षणों में इस्तेमाल किया गया। इन प्रशिक्षणों में हुए अनुभवों को इस लेख में दर्ज करने की कोशिश की गई है। दरअसल यह किताब बच्चों और बचपन को समझने का मौक़ा देती है। एक और महत्त्वपूर्ण काम यह किताब करती है। यह बच्चे और वयस्क के रिश्ते पर संवाद का अवसर देती है। पहले-पहल मैंने जब इस किताब को पढ़ा था, मुझे इसमें एक हाइपरएक्टिव बच्चे की छवि मिली। एक ऐसा बच्चा जो अपने मनमाफ़िक़ कुछ करना चाहता है। हालाँकि वो जो करता है, पूरी तल्लीनता के साथ करता है। यह ज़रूर है कि उसे अपने मनमाफ़िक़ कुछ करने का मौक़ा केवल अपनी ड्रॉइंग क्लास में मिलता है। यह मौक़ा उसके लिए क्या महत्त्व रखता है, यह कहानी के अन्त में पता चलता है।

यह कहानी और इसके चित्र पाठकों के साथ लगातार संवाद के कई मौक़े बनाते हैं। डाइट, पचमढ़ी में डीएड के विद्यार्थियों को यह कहानी सुनाई गई तो सबकी रुचि इस बात में थी कि शिक्षिका बच्चे को दौड़ने से रोकतीं क्यों नहीं; वह बाक़ी बच्चों को ड्रॉइंग के कामों को करने के लिए कैसे प्रेरित कर पा रही हैं; वह मैटी को इतनी आज़ादी कैसे दे पा रही हैं; आदि। हमने यह भी चर्चा की कि शिक्षिका मैटी की रचनात्मकता और उसकी दौड़ने की आदत के बीच सन्तुलन रखने के लिए क्या-क्या कर रही हैं। मैटी को डांस करते देख शिक्षिका कहती हैं, "मैटी, तुम्हें लय-ताल की अच्छी समझ है।" यह बात कहानी में हौले से आती है, और इसके बाद एक शिक्षिका के अपने विद्यार्थी के प्रति दोस्ताना व्यवहार को देखने का काम हो पाता है। मैटी जो बना रहा है, उसका क्या उपयोग बाक़ी बच्चे और शिक्षक कर रहे

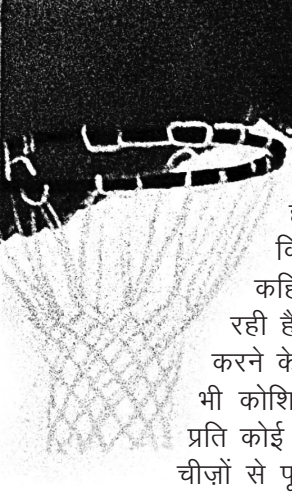

हैं? बाक़ी बच्चों का यह कहना, कि टीचर, प्लीज़ मैटी को बैठने को कहिए, इसपर भी शिक्षिका ध्यान दे रही हैं। वह बाक़ी बच्चों को अपना काम करने के लिए प्रेरित कर रही हैं, और यह भी कोशिश कर रही हैं कि बच्चे मैटी के प्रति कोई नकारात्मक सोच न रखें। मैटी की चीज़ों से पूरे समूह के लिए कुछ नया बनाने का काम संसाधनों को लेकर शिक्षक की सोच को सामने रखता है। कुछ भी अनुपयोगी नहीं है। बस उसे किस तरह से इस्तेमाल किया जाए, इसको लेकर रचनात्मक तरीक़े से सोचने की ज़रूरत है। इसी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए बचपन की विविधता, और बच्चों की विविधता पर भी बात शुरू की। इस दौरान कुछ अनुभव साझा हुए। कक्षा और घर में वो जो करना चाहते थे, उसको लेकर वयस्कों का नज़रिया कैसे हावी था; यहाँ शिक्षिका संवेदनशील हैं, और हरेक बच्चे पर कैसे ध्यान दे रही हैं; सीखने की आज़ादी दे रही हैं। कहानी के अन्त में मैटी का अपनी शिक्षिका से संवाद वाला हिस्सा सबको बेहद क़रीबी लगा। बच्चे बड़ों को बारीक़ी से देखते हैं, और वो यह अच्छे-से समझ पाते हैं कि बड़े उनके साथ कैसे व्यवहार कर रहे हैं। पहले पढ़ने पर, मैंने बच्चे को हाइपरएक्टिव मान लिया था। कहानी के अन्तिम हिस्से को पढ़कर मेरा भी यह भाव टूटा। बच्चों के सीखने के तरीक़े अलग-अलग हो सकते हैं। और कोई बच्चा कैसे सीखने की इस प्रक्रिया को अपनाता है, यह बच्चे पर निर्भर करता है।

बच्चों के साथ काम करते समय शिक्षक या फ़ैसिलिटेटर को किन बारीक़ियों में जाना होता है, कहानी इसके लिए कई सुराग़ देती है। एक अन्य कार्यशाला, 'लाइब्रेरी से दोस्ती' कोर्स के दौरान इस किताब की कहानी सुनाई गई। कहानी सुनाने के बाद जब यह सवाल किया गया कि अगर आप मैटी के शिक्षक होते, आप क्या करते। इसको लेकर अलग-अलग तरह के जवाब आए। मसलन, हम मैटी के पैरेंट्स की मदद लेते; हम उसके साथ अधिक समय बिताते; हम बच्चों की मदद लेते; आदि। इसी चर्चा में यह बात भी आई कि हमारे पास ऐसे कई बच्चे आते हैं जो ख़ूब सारी बातें करते हैं। कई बार हम परेशान हो जाते हैं, वहीं कुछ बच्चे बिलकुल भी बात नहीं करते। कुछ थोड़ी-थोड़ी देर में उठकर यहाँ-वहाँ घूमने लगते हैं। ऐसे में क्या किया जाए? तब यह चर्चा हुई कि हम वयस्क, बच्चों को अपने नज़रिए से देखते हैं, और चाहते हैं कि हम जो कह रहे हैं उस बात को वो मानें। यहाँ शिक्षिका उस बच्चे को पूरा मौक़ा दे रही हैं, और उससे संवाद कर रही हैं। पर उसकी आज़ादी में किसी तरह का ख़लल नहीं डाल रहीं। क्या हममें इतना धैर्य नहीं होना चाहिए कि हम बच्चे को वो जगह दें जो वह चाहता है! हमें बच्चों को समझना होगा। उनके सीखने की प्रक्रियाओं को लेकर नई-नई रणनीतियाँ भी बनानी होंगी। एक शिक्षक के रूप में विचारों की विविधता को जगह देना, और सबके बीच सामंजस्य बनाना भी एक शिक्षक की भूमिका है। इसी तरह, बच्चों की रचनात्मकता को उभारना भी एक शिक्षक की भूमिका है। मैटी की शिक्षिका मैटी के बालमन को समझ रही हैं।

इस किताब का इस्तेमाल एक प्रशिक्षण में लेखन गतिविधि के दौरान भी किया। कहानी पढ़ने के बाद प्रशिक्षार्थियों को यह टास्क दिया गया कि आपको मैटी को एक पत्र लिखना है। इस पत्र में बचपन की इस ड्रॉइंग क्लास से जुड़े अनुभव के बारे में आपको मैटी के साथ अपनी भावनाएँ भी साझा करनी हैं। यह पत्र आप वयस्क होने के बाद मैटी को लिख रहे हैं। आप और मैटी एक ही ड्रॉइंग क्लास में जाते थे, तब आप मैटी से परेशान भी होते थे। अब आप मैटी के साथ अपनी भावनाएँ व्यक्त कर रहे हैं, और उसकी उस समय की स्थिति को लेकर पत्र में बातें दर्ज कर रहे हैं। इस पत्र लेखन में यह हिस्सा मज़बूती से आया कि बाक़ी बच्चों

को मैटी से किस तरह की परेशानी होती थी। पर अब जब वो बड़े हो गए हैं, वो मैटी की स्थिति को समझ पाते हैं। जैसे, प्रतिभागियों ने लिखा कि...

"मैटी, उस समय जब तुम दौड़ते रहते थे तो मुझे बुरा लगता था। तुम बैठते ही नहीं थे। पर अब मुझे लगता है कि तुम कितने मज़े से क्राफ़्ट किया करते थे। तुमने हम लोगों को कभी परेशान नहीं किया। इतने सालों बाद इस बात को याद करके मुझे हँसी आ रही है कि तुम्हारे रॉकेट से पूरी क्लास भर गई थी।"

इस किताब के चित्रों में मैटी की दुनिया बेहद ख़ूबसूरती से बयाँ की गई है। एक दुनिया जहाँ मैटी अपनी कल्पना को रचता है, और परिन्दों की तरह उड़ता है। वहीं शिक्षिका भी आपको कल्पनाशील दुनिया में उड़ान भरती हुई मिलेंगी। इनमें हरे और नीले रंग के ख़ूब सारे शेड्स हैं जो मैटी, शिक्षिका और बाक़ी बच्चों की सोच और स्थिति को बयाँ करते हैं।

मैटी के ज़रिए मैंने सोशियो-इमोशनल लर्निंग के बारे में और जानना भी शुरू किया। इस कहानी को पढ़ते हुए शायद आपको जूलिया वेबर गार्डन की *मेरी ग्रामीण शाला की डायरी* याद आ जाए, जिसमें उन्होंने भी बच्चों को जानने की प्रक्रिया के कुछ उदाहरण दर्ज किए हैं। मैटी की कहानी को पढ़ते हुए मैं जॉन होल्ट की किताब *बचपन से पलायन* पर वापस लौटी। ख़ासतौर पर, बाल्यावस्था की संस्था वाले हिस्से पर। इसमें उन्होंने विस्तार से बचपन, बच्चों और बचपन की विविधता को दर्ज किया है।

मैटी, बैठ जाओ! बैठ जाओ, मैटी! मज़ेदार शीर्षक है जो कहानी को लेकर संवाद शुरू करता है। मैटी को ऐसा क्यों कहा जा रहा है; मैटी कौन है; कहानी किस बारे में है? इसका अन्दाज़ा किताब के कवर पेज का चित्र देता है। पर जब कहानी शुरू होती है, कई हिस्से संवाद के लिए खुलते हैं। यह भी महसूस होता है कि मैटी केवल कल्पना नहीं है। वह एक हक़ीक़त है। इन्दु ने अपने अनुभव को कहानी में पिरोया है।

इस चित्रकथा को एकलव्य ने प्रकाशित किया है। यह हिन्दी और अँग्रेज़ी दोनों ही भाषाओं में उपलब्ध है।

सभी चित्र मैटी, बैठ जाओ! बैठ जाओ, मैटी! पुस्तक से साभार

दीपाली शुक्ला, एकलव्य संस्था के प्रकाशन कार्यक्रम से एक दशक से अधिक समय से जुड़ी हैं। बाल साहित्य पढ़ना पसन्द है। लाइब्रेरी और रीडिंग पर काम करती हैं। लाइब्रेरी से दोस्ती कोर्स से जुड़ी हैं। बच्चों और शिक्षकों के साथ बाल साहित्य को लेकर चर्चा करना भी अच्छा लगता है।

सम्पर्क : deepalishukla99@yahoo.com